एम.आर. मोरारका–जीडीसी रूरल रिसर्च फाउण्डेशन

स्टेशन रोड़, नवलगढ़, झुन्झुनू (राजस्थान)

शनिवार, दिनांक 06 सितम्बर, 2014 (पहला दिन) तीसरी गतिविधि

स्वयं सहायता समूह – एक परिचय

- सन 1993 में प्रथम स्वयं सहायता समूह का गठन गॉव धोड़ीवारा खुर्द में किया गया।
- स्वयं सहायता समूह के गठन का उद्देश्य गरीब महिलाओं के जीवन स्तर को ऊपर उठाना व उन्हे ऋण के मकड़ जाल से मुक्त कराना है।
- माइक्रो फाइनेन्स से महिलाओं के सशक्तिकरण के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में फाउण्डेशन ने स्वयं सहायता समूहों का गठन किया।
- स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को अपना बिजनेस शुरु करने के लिये ट्रेनिंग दी गई तथा बैंक से लोन के लिये इन समूहों को बैकों से जोड़ा गया।
- समूह की महिलाओं को बूँदी बाँधने का, लाख की चूड़ियाँ बनाने व बेचने का, आचार बनाने का, पापड़ व मगौडी बनाने का, कपड़े के बैग बनाने, पायदान बनाने, जूती बनाने जैसे आदि कार्यों की ट्रेनिंग दी गई।
- वर्तमान में 145 स्वयं सहायता समूह कार्य कर रहे हैं इन समूहों का कार्यक्षेत्र नवलगढ़ शहर, नाहरसिंघानी, मोहब्बतसरी, अजीतपुरा, मुकुन्दगढ़, कसेरु, जॉटवाली, तैतरा, धोड़ीवारॉ कला, धोड़ीवारॉ खुर्द, मझाऊ, ढाणी मझाऊ, झरडा की ढाणी, बलवंतपुरा, ढिगाल, झुन्झुनूं शहर, नुआ, आबूसर आदि जगहों पर चल रहे हैं।
- इन 145 समूहों से 2800 परिवार लाभान्वित हो रहे हैं
- इन समूहों को बैंक से अब तक 1 करोड़ 22 लाख रु. तथा इंटर लोन 1 करोड़ 50 लाख रुपये हुआ है।

गणेश स्वयं सहायता समूह

श्रीमती कमला देवी पत्नी श्री बनवारी लाल

गाँव– मुकुन्दगढ़, वार्ड नं. 20

जाति– खटीक

परिवार में सदस्य– 06

समूह का गठन – अप्रैल 2009

सन् 2009 में मुकुन्दगढ़ में गणेश स्वयं सहायता समूह की मीटिंग में श्रीमती कमला देवी को भी बुलाया गया। उस समय कमला देवी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। गणेश स्वयं सहायता समूह की मीटिंग श्रीमती भँवरी देवी के घर पर रखी गई। जिसमें मोरारका फाउण्डेशन की श्रीमती विनोद देवी ने स्वयं सहायता समूह व बचत के महत्व को समझाया। इस समूह में श्रीमती कमला देवी को भी सदस्य बनाया गया। सितम्बर 2009 में कमला देवी ने समूह से 40,000 रु. का ऋण उठाया व इस ऋण से अपने बेटे को 15000 रु. में एक गधा–गाड़ी बनवा कर दी एवम् 20,000 रु. से उसने कबाड़ी का काम शुरु किया। बचे हुये 5000 रु. में से उसने अपनी पुत्री के पुत्र जन्म के कार्यक्रम पर खर्च कर दिए।

कमला देवी का कहना है कि यही ऋण अगर में किसी महाजन से लेती तो मुझे इस ऋण का ब्याज व मूल रकम एक साथ चुकाना मुश्किल हो जाता। समूह से ऋण मिलने के कारण मैंने घर के खर्च में से ही कुछ पैसे बचाकर छोटी–छोटी आसान किश्तो में अपने को ऋण चुका दिया।

जयश्री श्याम स्वयं सहायता समूह

श्रीमती मंजू देवी पत्नी श्री रामलाल

गाँव – मुकुन्दगढ़, वार्ड नं. 20

जाति– खटीक

परिवार के सदस्य – 07

समूह का गठन – सितम्बर 2013

सितम्बर, 2013 में गाँव मुकुन्दगढ़ ने वार्ड नं 20 में जय श्री श्याम स्वयं सहायता समूह का गठन मोरारका फाउण्डेशन के द्वारा श्रीमती संतरा देवी के घर पर किया गया। जिसमें श्रीमती मंजू देवी को सभी की सहमति से समूह की सचिव बनाया गया। मंजू देवी ने समूह से 5000/– रु. का ऋण लिया। जिससे 4000 रु. बच्चों की स्कूल फीस व किताबों पर खर्च कर दिए एवं 1000 रु. से घर का बिजली का बिल जमा करवा दिया।

दिनांक 14.05.2014 को मंजू देवी ने 4000 रु. का ऋण और लिया। जिससे उसने एक बकरी खरीदी। जिससे वह अपने बच्चों को दूध पिला सके। उनका कहना है, कि मैं बाजार से दूध खरीद कर बच्चों को नहीं पिला सकती थी, इसलिये मैंने बकरी खरीदी। मंजू देवी बून्दी व बन्धेज का काम करती है, जिससे उसने कुछ पैसे बचाकर समूह का ऋण आसान किश्तो में चुका दिया। उसका कहना है कि स्वयं सहायता समूह से ऋण लेकर वह अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधार सकी।

जयश्री श्याम स्वयं सहायता समूह

श्रीमती शारदा देवी पत्नी श्री रामलाल

गाँव – मुकुन्दगढ़, वार्ड नं. 20

जति – खटीक

परिवार के सदस्य – 06

समूह का गठन – सितम्बर 2009

सितम्बर 2009 में जय श्री श्याम स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। इस समूह में 11 सदस्यों का नामांकन हुआ। बचत राशि 100/– प्रति माह प्रति सदस्य रखी गई। सभी सदस्यों की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर थी।

मोरारका फाउण्डेशन परियोजना अधिकारी श्रीमती विनोद देवी ने श्रीमती शारदा देवी के घर पर समूह की मीटिंग रखी। मीटिंग में सभी सदस्यों की समस्या सामने आई कि हम सब सदस्य बैक ऋण एव बचत राशि चुकाने में असमर्थ है। शारदा देवी ने कहा कि हमारे पास आय प्राप्त करने का कोई स्त्रोत नही है। सभी सदस्यों से सलाह के बाद आयवर्धक कार्यों के बारे में बताया गया तथा समूहो को पेपर, कैरी बैग व बंधेज का प्रशिक्षण दिया गया, क्योंकि इनकी बाजार में माँग है। आज इस कार्य से 45 महिलाओं को प्रतिमाह 1500 से 1700 रुपये तक की मासिक आमदनी हो रही है।

ये सभी महिलायें समूह की बचत स्वयं की कमाई से चुकाती है। शारदा देवी का कहना है, मेरी बहिनों व मुझे गुलामी से छुटकारा मिला है। इनके लिये में मोरारका फाउण्डेशन का सदैव आभारी रहूँगी।

ज्योति स्वयं सहायता समूह

श्रीमती सरोज पत्नी श्री सुशील

गाँव – मुकुन्दगढ़

जाति– जाँगिड़

परिवार में सदस्य – 4

समूह का गठन– मई 2012

सन् 2012 में ज्योति स्वयं सहायता समूह का गठन किया गया। गाँव मुकुन्दगढ़ में श्रीमती उर्मिला देवी के घर पर मोरारका फाउण्डेशन की ओर से महिलाओं को समूह तथा बचत के महत्व के बारे में बताया गया। 13 महिलाओं का समूह बनाया गया। इस समूह में सभी महिलाऐं समान आय व समान कार्य करने वाली है। इस समूह की एक सदस्य सरोज भी थी। बैंक से समूह को लोन दिलाया गया, सरोज ने समूह से 15000 रुपये का लोन लेकर अपने पति को सब्जी का ठेला खरीद कर दिया तथा 5000 रुपये में स्वयं के लिए सिलाई मशीन खरीदकर, घर पर ही सिलाई का कार्य शुरु किया। सरोज का कहना है, कि हम पति–पत्नि दोनो ही बेरोजगार होकर घर पर बेठै थे, समूह से जुड़कर लोन व रोजगार दोनों मिल गये। दोनों का आय वर्धक कार्य मिल गया और घर खर्चा भी आसानी से चलने लग गया। मैंने छोटी–छोटी किश्त में लोन भी चुका दिया।

सरोज का कहना है कि मोरारका फाउण्डेशन ने हमें दूसरों की गुलामी करने से छूटकारा दिलाया। मैं मोरारका फाउण्डेशन का बहुत–बहुत धन्यवाद करती हूँ और मेरा कहना है कि हर गाँव में हर महिलाओं को समूह में जोड़ना चाहिए।

सालासर स्वयं सहायता समूह

श्रीमती संतोष पत्नी श्री दीनदयाल

गाँव – बलवंतपुरा

जाति – मेधवाल

परिवार में सदस्य – 13

खेतीहर मजदूर

समूह का गठन–दिसम्बर 2009

सन् 2009 में बलवंतपुरा में सालासर स्वयं सहायता समूह की मीटिंग में श्रीमती संतोष को भी बुलाया गया। संतोष की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब थी, साथ ही उसका 20 साल का पुत्र 3 वर्ष से बीमार होने के कारण उसकी आर्थिक स्थिति और भी खराब हो गई थी।

उस मीटिंग में मोरारका फाउण्डेशन की श्रीमती विनोद देवी ने स्वयं सहायता समूह के महत्व के बारे में समझाया और श्रीमती संतोष समूह की सदस्य बन गई। सितम्बर 2009 में मैंने समूह से 35,000/– रु. का ऋण (लोन) ले लिया। इस लोन से मैंने एक गाय खरीदी व बाकी बचे पैसे से खल व चूरी तथा बेटे का इलाज करवाया। गाय प्रतिदिन 15 से 17 लीटर दूध देने लगी उसमें से 13 से 14 लीटर दूध डेयरी को 20 रु. प्रति लीटर के भाव से बेचने लगी तथा प्रतिदिन 250 से 300 रु. की आमदनी होने लगी, मेरी आर्थिक स्थिति भी सुधरने लगी साथ ही साथ बेटे की तबीयत में सुधार होने लगा।

अक्टूबर 2011 में समूह से दोबारा लोन लिया, जिससे एक और गाय खरीदी तथा दूध बेचने का कार्य जारी रखा। इन आमदनी से जो लोन मैंने लिया था, उसे भी चुका दिया। यदि मोरारका फाउण्डेशन मेरी जिन्दगी में न होती तो मेरे जीवन में अंधेरा ही रहता और मैं आज भी कर्ज से ही दबी रहती।

कार्यक्रम समन्वयक
मोरारका फाउण्डेशन